किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग

- महाकवि भारवि

कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे
जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः ।
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं
प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः ॥2॥

अन्वय - कृतप्रणामस्य सपत्नेन जितां महीं महीभुजे निवेदयिष्यतः तस्य मनः न विव्यथे। हि हितैषिणः मृषा प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति।

अर्थ - (महाराज युधिष्ठिर को) प्रणाम करने वाले, शत्रु द्वारा जीती गई पृथ्वी का वृत्तान्त राजा को कहने वाले, उस (दूत) का मन दुःखी नहीं हुआ; क्योंकि हित चाहनेवाले झूठे प्रिय वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

शब्दार्थ :- कृतप्रणामस्य = कृतः प्रणामः येन सः कृतप्रणामः, तस्य इति बहुव्रीहिः
√कृ + क्त = कृत, प्रणाम = प्र + √नम् + घञ्
कृतप्रणामस्य = जिसके द्वारा प्रणाम किया गया है अर्थात् जिसने प्रणाम किया है। यह शब्द तस्य अर्थात् दूत के लिए प्रयुक्त हुआ है।

महीं = पृथ्वी, मही शब्द द्वितीया एकवचन
महीभुजे = महीभुक् - मही ~~भुनक्ति~~ भुनक्ति
इति महीभुक् - चतुर्थी एकवचन में महीभुजे
अर्थात् राजा से

जितां = जीती गयी, द्वितीया एकवचन
(मही शब्द का विशेषण)
√जि + क्त + टाप्

सपत्नेन = शत्रु के द्वारा, तृतीया एकवचन
निवेदयिष्यतः = निवेदन करने वाले का
षष्ठी एकवचन
नि + √विद् + णिच् + शतृ

विव्यथे (न) = दुःखी न हुआ
√व्यथ् लिट्लकार प्र० पु० ए० व०

हि = क्योंकि (अव्यय)
प्रियं = प्रिय द्वितीया एकवचन
प्रवक्तुं = प्र + √वच् + तुमुन्
बोलने के लिए
इच्छन्ति = इच्छा करते हैं।
√इष् लट्लकार प्र०पु० बहु०

मृषा = मिथ्या, झूठ (अव्यय)

हितैषिण: = हितैषी प्रथमा बहुवचन
हित + √इष् + णिनि

व्याख्या - प्रस्तुत पद्य में कवि ने निम्न लिखित तथ्यों को प्रकाशित किया है -

(1) दूत ने अत्यन्त विनीतता का परिचय दिया है और अपने आश्रयदाता राजा युधिष्ठिर को उनके शत्रु द्वारा जीती गयी पृथ्वी के वृत्तान्त को सुनाया है।

(2) यद्यपि युधिष्ठिर उसके आश्रयदाता हैं किन्तु शत्रुविषयक पराक्रम का वर्णन करने में उसका मन दुःखी नहीं होता है, क्योंकि वह सत्य का सम्भाषण कर रहा है।

(3) दूत राजा युधिष्ठिर का हित चाहने वाला है अतः उनको ऐसी कोई झूठ बात नहीं कहता है जो उनको प्रिय लगे। यदि कटु सत्य राजा के हित में है तो वह निडर होकर उनको बताता है।

(4) कवि ने सामान्य सामाजिक परम्परा के आधार पर दूत के सत्य सम्भाषण का समर्थन किया है कि हितैषी जन मिथ्या प्रिय वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

कवि भारवि की यह विशेषता है कि वह एक ही पद्य में बहुत सी बातें कह जाते हैं। उनके इस प्रयास में कभी-कभी भाषा की सरलता समाप्त होती प्रतीत होती है किंतु यह उनकी काव्य शैली का वैशिष्ट्य भी है।

—x—